# जैन जी. के.

## General Knowledge

## भाग - ४

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

# 1 प्रार्थना

आपकी भक्ति कर रहा हूँ मैं,
अपनी शक्ति जान गया हूँ मैं।
अनंत शक्तियाँ मुझमें हैं,
कम कभी नहीं जो होती हैं।
चेतन कभी अचेतन हो सकता नहीं,
जीव कभी जीवन रहित होता नहीं।
देहावसान (मृत्यु) से मैं डरता रहता था,
उससे बचने को अभक्ष्य भक्षण करता था।
जब कि
जीव का देह में आना जाना होता रहता है,
देह बदलने से जीव नष्ट नहीं होता है।
अतः
अब देह बदलने का क्रम भंग करना मुझे,
देह रहित होने के लिए प्रयास करना मुझे ।

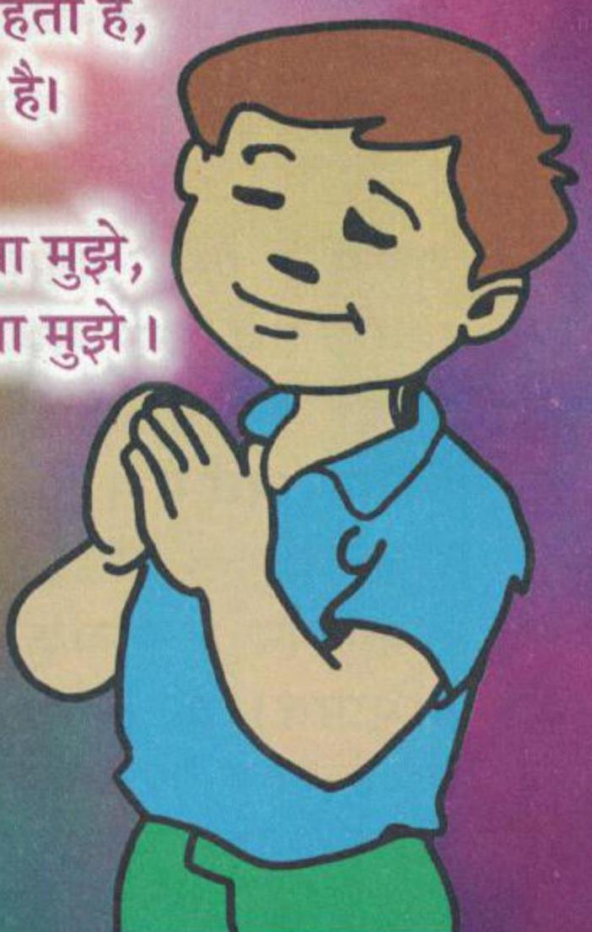

# 2 सम्यग्दर्शन

आत्मा में ही अपनापन होता जिनको,
पर में नहीं अपनापन होता जिनको।
स्व में 'यह मैं हूँ' दृढ़ प्रतीति होती जिनको,
बतलाओ तो क्या प्रगट होता उनको ?
सम्यग्दर्शन

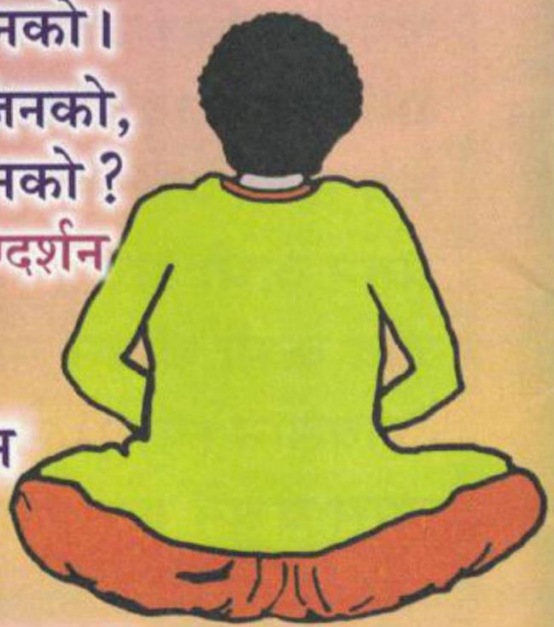

**१) सम्यग्दर्शन किसे कहते हैं ?**

आत्मा में 'यह मैं हूँ' ऐसे दृढ़ श्रद्धान को सम्यग्दर्शन कहते हैं।

**२) सम्यग्दर्शन कब होता है ?**

जब भावकर्म, द्रव्यकर्म और नोकर्म से भिन्न शुद्ध-आत्मा में 'यह मैं हूँ' ऐसा अपनापन स्थापित होता है।

**३) सम्यग्दर्शन कब तक कायम रहता है ?**

'यह मैं हूँ' ऐसा अपनापन जब तक शुद्ध - आत्मा में रहेगा, तब तक सम्यग्दर्शन कायम रहता है ।

**४) सम्यग्दर्शन में दर्शन शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है ?**

श्रद्धान अर्थ में ।

**५) सम्यग्दर्शन में सम्यक् शब्द देने का क्या प्रयोजन है ?**

सम्यग्दर्शन में सम्यक् पद विपरीत-अभिनिवेश (ऊल्टा अभिप्राय) के निषेध के लिए दिया गया है ।

**६) क्या निश्चय और व्यवहार सम्यग्दर्शन एक साथ हो सकते हैं ?**

हाँ, ये दोनों सम्यग्दर्शन एक ही काल में पाए जाते हैं ।

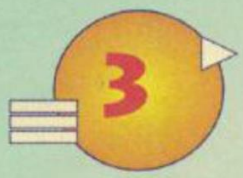

# आत्मानुभूति

जब जीव आत्मा में तन्मय होता है,
जब जीव आत्मा में एकत्व करता है।
तब आपके साथ रहती हूँ मैं,
अभेद के लक्ष्य से होती हूँ मैं।
स्व की अनुभूति हूँ मैं,
बतलाओ कौन हूँ मैं ?

आत्मानुभूति

१) आत्मानुभूति किसे कहते हैं ?
आत्मा में तन्मय होने को।

२) तन्मय से क्या तात्पर्य है ?
आत्मा में 'यह ही मैं हूँ' -ऐसी दृढ़ प्रतीति ही तन्मय होना है।

४) अनुभूति किसके लक्ष्य से उत्पन्न होती है ?
अभेद आत्मा के

५) भेद के लक्ष्य से क्या होता है ?
विकल्पों की उत्पत्ति

# 4 अनुभव

आत्मा में एकत्व[1] रहता जब तक,
मैं आपके साथ में रहता तब तक।
आत्मानूभूति के काल में पैदा होता हूँ मैं,
आत्मानूभूति के बिना भी कायम रहता हूँ मैं।
आत्मदर्शन से होता हूँ मैं,
बतलाओ कौन हूँ मैं ?

अनुभव

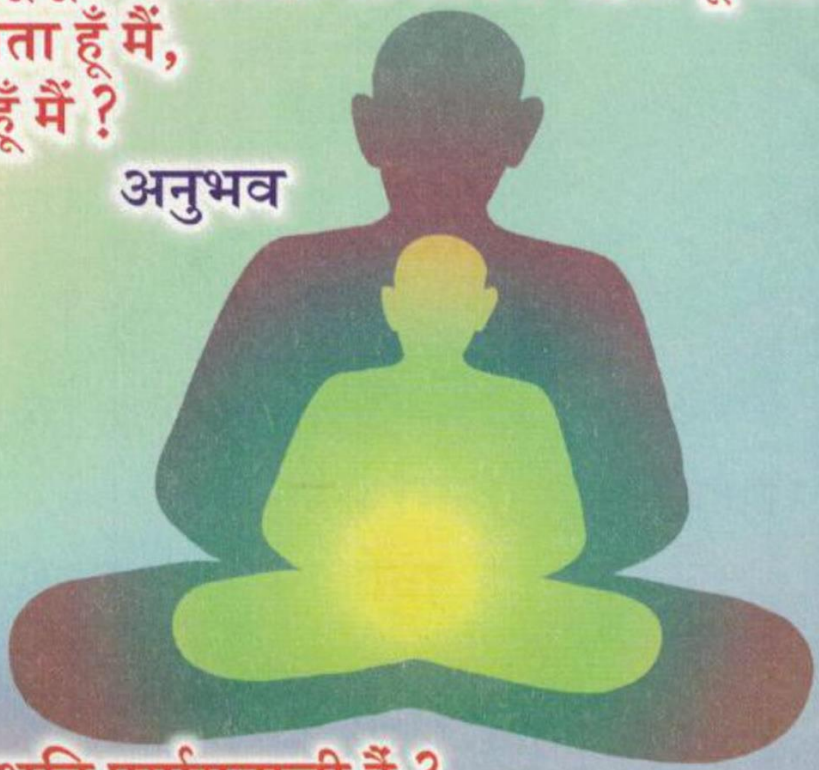

१. क्या अनुभव और अनुभूति पर्यायवाची हैं ?
नहीं, क्योंकि अनुभूति के काल में अनुभव प्रकट होता है, पर अनुभूति के जाने के पश्चात् भी जब तक आत्मा में एकत्व रहता है, तब तक अनुभव कायम रहता है ।

२. क्या अनुभूति के समाप्त होते ही सम्यग्दर्शन नष्ट हो जाता है?
नहीं, अनुभूति के काल में सम्यग्दर्शन की उत्पत्ति होती है और जब तक अनुभव रहता है तब तक सम्यग्दर्शन रहता है।

1 आत्मा में 'यह मैं हूँ' - ऐसा मानना ही एकत्व है ।

5

# क्षयोपशम लब्धि

ज्ञानावरणादि का क्षयोपशम हूँ,
तत्त्वज्ञान समझने की शक्ति विशेष हूँ।
पहले नम्बर की लब्धि हूँ
बतलाइए मैं कौन हूँ?
क्षयोपशमलब्धि

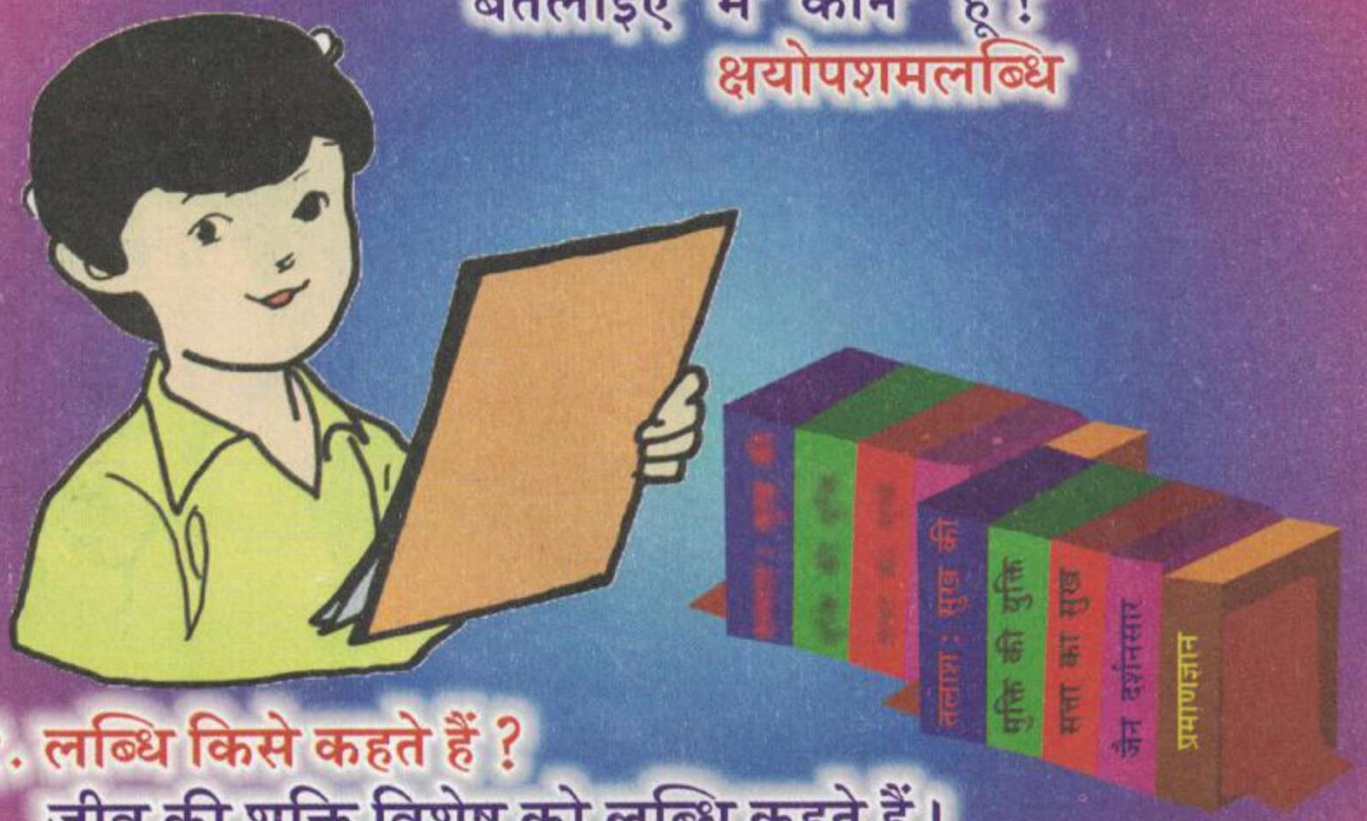


१. लब्धि किसे कहते हैं?
जीव की शक्ति विशेष को लब्धि कहते हैं।

२. लब्धि कितने प्रकार की होती हैं? नाम बताइए।
लब्धि पांच प्रकार की होती हैं -
(१) क्षयोपशम (२) विशुद्धि (३) देशना
(४) प्रायोग्य (५) करण

३. जिसके होने पर तत्त्वविचार करने की शक्ति हो - ऐसे ज्ञानावरणादि कर्मों का क्षयोपशम होना कौन सी लब्धि है?
क्षयोपशमलब्धि

# 6 विशुद्धि - देशना लब्धि

कषायें मंद होने पर जब,
तत्त्वविचार का उद्यम हो जब;
तब होती हूँ मैं,
बताओ कौन हूँ मैं ?

विशुद्धिलब्धि

देव-गुरू की वाणी सुनकर,
अथवा शास्त्रों को पढ़कर;
सही निर्णय होता जिनको,
बताओ कौन सी लब्धि उनको?

देशनालब्धि

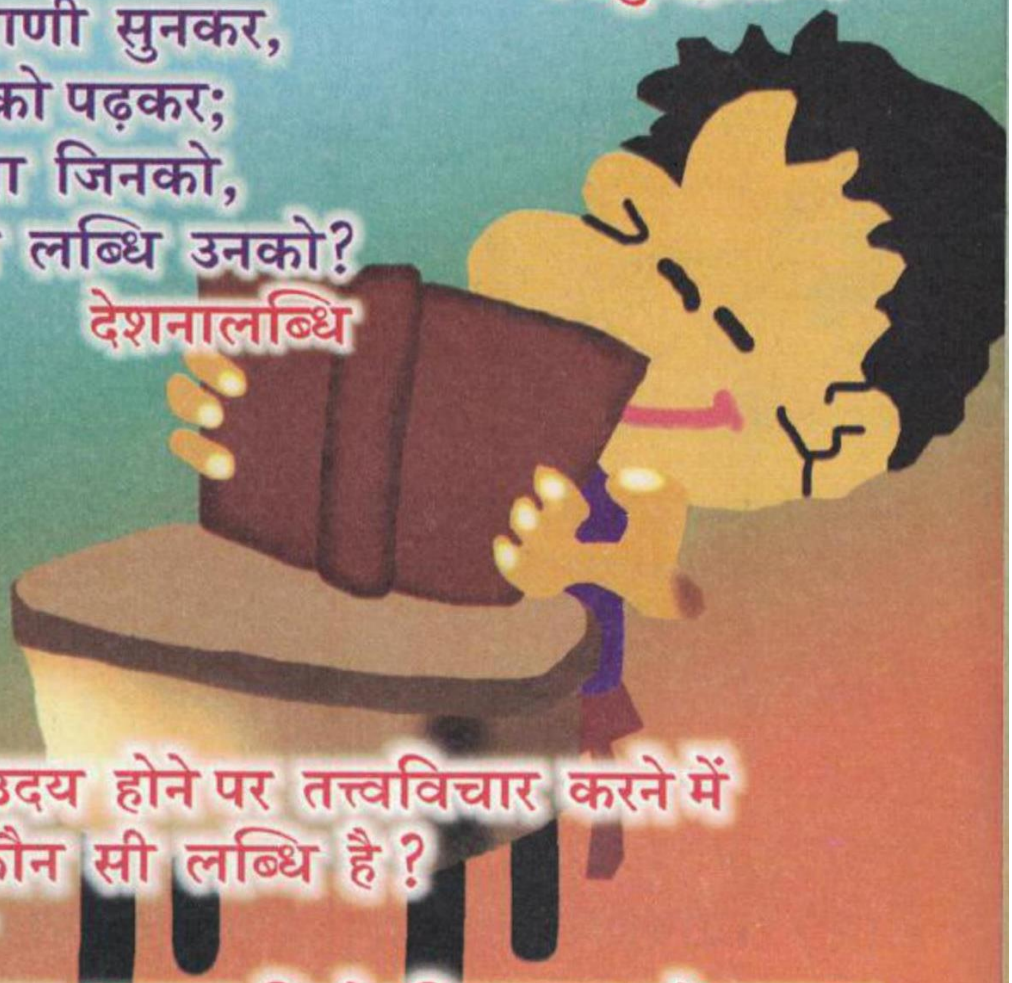

१. मोह के मंद उदय होने पर तत्त्वविचार करने में उद्यम होना कौन सी लब्धि है ?
विशुद्धिलब्धि

२. पूर्व संस्कारों द्वारा अथवा जिनोपदिष्ट तत्त्व को सुनकर, पढ़कर, चिंतवन करके सही तत्त्व निर्णय पर पहुंचना कौन सी लब्धि है ?
देशना लब्धि

7

# प्रायोग्य - करण लब्धि

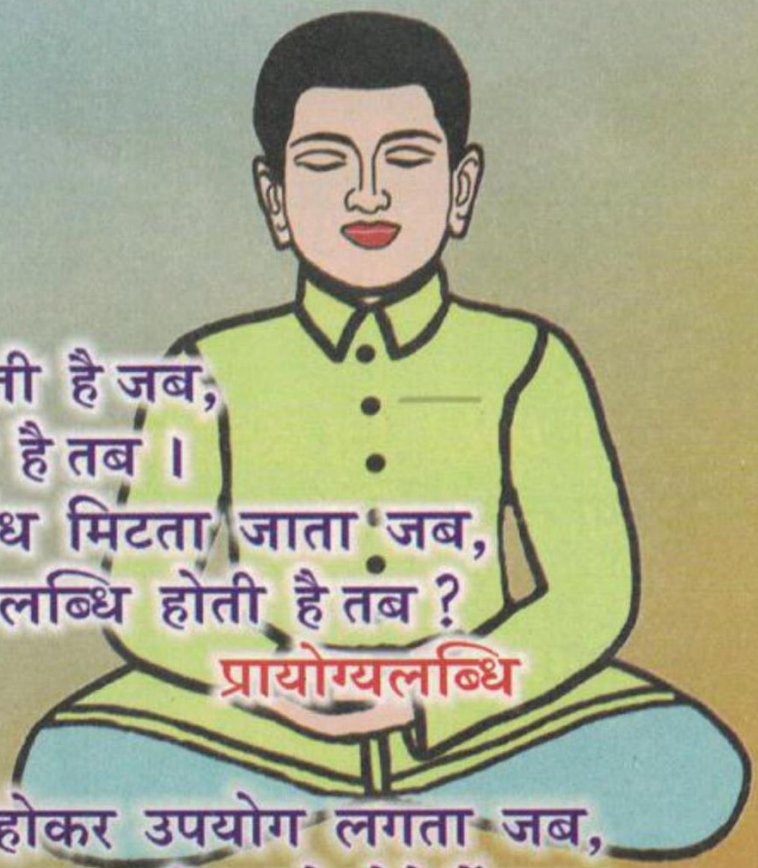

निर्णीत तत्त्वों में रुचि बढ़ती है जब,
परिणामों में विशुद्धि आती है तब ।
पाप प्रकृतियों का बंध मिटता जाता जब,
बतलाइए कौन सी लब्धि होती है तब ?

प्रायोग्यलब्धि

तत्त्वविचार में ही तद्रूप होकर उपयोग लगता जब,
अधः, अपूर्व, अनिवृत्तिकरण जीव को होते हैं तब ।
अंतर्मुहूर्त में ही सम्यग्दर्शन होता जब,
तो बताओ कौन सी लब्धि होती तब ?

करण लब्धि

१. देशना लब्धि द्वारा निर्णीत आत्मतत्त्व में वृद्धिंगत रुचि का परिपाक कौन सी लब्धि है ?
प्रायोग्यलब्धि

२. बुद्धिपूर्वक तत्त्वविचार में उपयोग तद्रूप होकर लगने से परिणामों का निर्मल हो जाना कौन सी लब्धि है ?
करण लब्धि

# क्या आप जानते हो?

१. भव्य - अभव्य दोनों को कौन सी लब्धियाँ हो सकती हैं ?
क्षयोपशम, विशुद्धि, देशना और प्रायोग्य।

२. क्या करणलब्धि अभव्य को हो सकती है ?
नहीं।

३. किस लब्धि के बिना जीवों को तत्त्व समझ में नहीं आता ?
क्षयोपशमलब्धि

४. किस लब्धि के बिना जीव तत्त्व समझने के लिए नहीं आता ?
विशुद्धिलब्धि ।

५. इस भव या पूर्वभव के उपदेश अथवा पूर्व संस्कार के निमित्त से कौन सी लब्धि होती है ?
देशनालब्धि।

६. किस लब्धि में पूर्व कर्मों की सत्ता और नवीन कर्म बंध कम होते जाते हैं ?
प्रायोग्यलब्धि।

७. सम्यग्दर्शन का निश्चित कारण कौन सी लब्धि है ?
करणलब्धि।

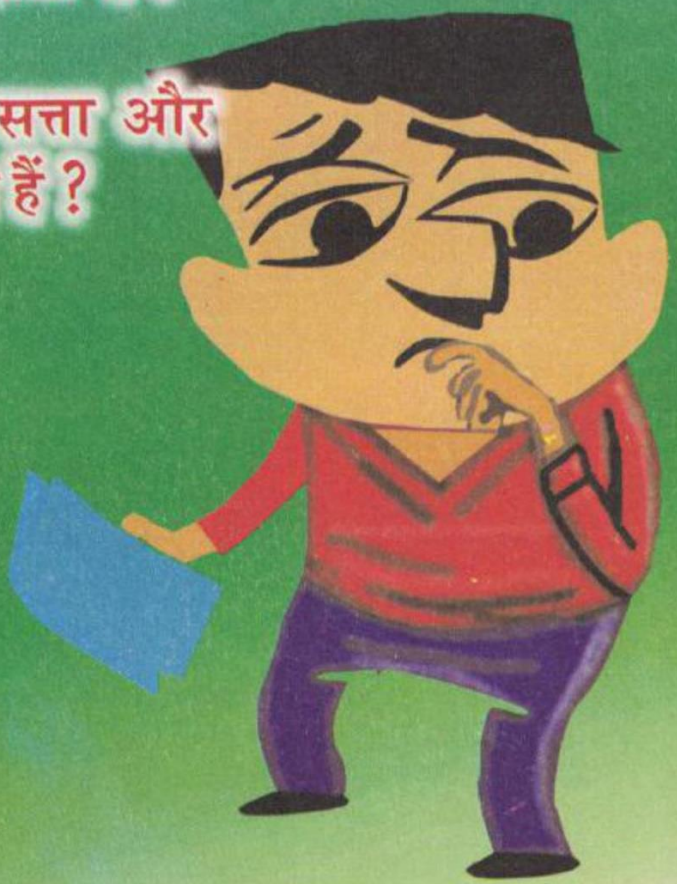

9

# बताओ तो जानें?

**१. क्या सम्यग्दृष्टि नरक जा सकता है ?**

यदि सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के पूर्व जीव को नरकायु का बंध हो गया हो तो वह जीव प्रथम नरक में जा सकता है ।

**२. सम्यग्दर्शन होनेके पश्चात् किस गति का बंध नहीं होता?**

नरक और तिर्यंच गति का बंध नहीं होता, देव गति में भवनवासी, व्यंतर और ज्योतिष देव नहीं होते तथा मनुष्यगति में भी नीच कुल, विकृतअंग, अल्पायु और दरिद्री नहीं होते।

**३. सम्यग्दर्शन कैसे प्राप्त होता है ?**

स्व-पर भेद-विज्ञान पूर्वक आत्मानुभव से ।

**४. भेद-विज्ञान किसे कहते हैं ?**

देह-रागादि पर से भिन्न आत्मा को स्व जानना ही भेद-विज्ञान है । यह भेद स्व और पर के बीच किया जाता है, अतः इसे स्व-पर भेदविज्ञान भी कहते हैं ।

**५. सम्यग्ज्ञान की प्राप्ति के लिए क्या करना चाहिए ?**

सम्यक्ज्ञान की प्राप्ति के लिए भी पुरुषार्थ सम्यग्दर्शन का ही होता है क्योकि सम्यग्दर्शन होते ही सारा ज्ञान सम्यक् हो जाता है ।

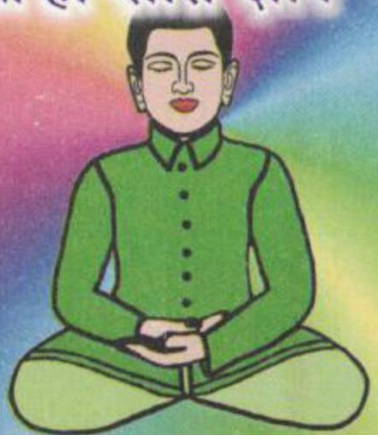

10

# लेश्या

कषायों की तीव्रता-मंदता बतलाती हैं जो,
आत्मा का कर्म से संबंध कराती हैं जो।
शरीर के रंग को भी बतलाती हैं जो,
कषाय से अनुरंजित जीव की प्रवृत्ति हैं जो।
जीव को पुण्य-पाप से लिप्त कराती हैं जो,
बताओ तो छः भेद वाली कौन हैं वो?

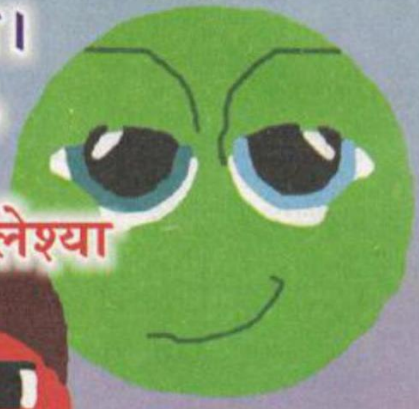

लेश्या लेश्या लेश्या

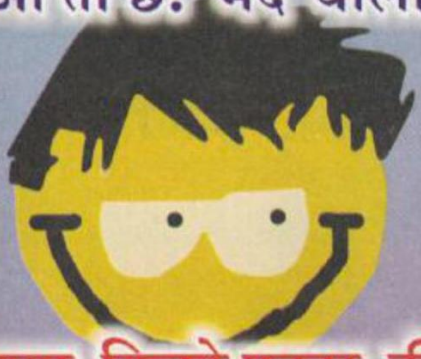

१. लेश्या कितने प्रकार की होती हैं?
छः - कृष्ण, नील, कापोत, पीत, पद्म, शुक्ल।

२. शुभ लेश्या कौन सी हैं?
पीत, पद्म, शुक्ल।

३. अशुभ लेश्या कौन सी हैं?
कृष्ण, नील, कापोत।

४. मंद कषाय होने पर कौन सी लेश्या होती हैं?
पीत (मंद), पद्म(मंदतर), शुक्ल(मंदतम)।

५. तीव्र कषाय होने पर कौन सी लेश्या होती हैं?
कृष्ण(तीव्रतम), नील(तीव्रतर), कापोत(तीव्र)।

६. द्रव्य और भाव रूप कौन सी लेश्या होती हैं?
छहों लेश्या द्रव्य और भाव रूप होती है।

# 11 भाव और द्रव्य लेश्या

१. भाव लेश्या किसे कहते हैं ?
कषाय से अनुरंजित जीव की मन-वचन-काय की प्रवृत्ति को भाव लेश्या कहते हैं ।

२. जीवों के परिणामों के अनुसार कौन सी लेश्या बदलती हैं ?
भाव लेश्या।

३. द्रव्य लेश्या किसे कहते हैं ?
शरीर के रंग को द्रव्य लेश्या कहते हैं ।

४. आयुपर्यन्त कौन सी लेश्या रहती है ?
द्रव्यलेश्या ।

५. सयोगकेवली को कौन सी लेश्या नहीं होती ?
भाव लेश्या ।

६. अयोगकेवली और सिद्ध को कौन सी लेश्या नहीं होती ?
दोनों लेश्या नहीं होती, वे लेश्या रहित होते हैं ।

# 12 द्रव्य की शक्तियाँ

**१. प्रत्येक द्रव्य में ऐसी कितनी शक्तियाँ है, जिसके कारण सुनिश्चित पर्याय स्वसमय में ही होती है ?**

छः शक्तियाँ हैं - भाव, अभाव, भाव-अभाव, अभाव - भाव, भाव-भाव, अभाव-अभाव शक्ति।

**२. भाव शक्ति किसे कहते हैं ?**

जिस शक्ति के कारण द्रव्य में वर्तमान अवस्था होती ही है।

**३. अभाव शक्ति किसे कहते हैं ?**

जिस शक्ति के कारण वर्तमान अवस्था के अतिरिक्त अन्य कोई अवस्था नियम से नहीं होती है।

**४. भाव-अभाव शक्ति किसे कहते हैं ?**

जिस शक्ति के कारण विद्यमान पर्याय का अगले समय में नियम से अभाव हो जाएगा ।

**५. अभाव - भाव शक्ति किसे कहते हैं ?**

जिस शक्ति के कारण अगले समय में होने वाली पर्याय अगले समय में नियम से होगी ही ।

**६. भाव-भाव शक्ति किसे कहते हैं ?**

जिस शक्ति के कारण त्रिकाली और वर्तमान भाव एक होकर रहते हैं, जिनका कभी अभाव नहीं होता है। जैसे- आत्मा के ज्ञानादि-भाव त्रिकाल ज्ञानादि रूप ही रहते हैं ।

**७. अभाव-अभाव शक्ति किसे कहते हैं ?**

जिस शक्ति के कारण आत्मा कभी पररूप नहीं होता है। इस शक्ति में त्रिकाल अभाव की बात कही गई है कि आत्मा में पर का अभाव है और वह त्रिकाल अभाव रूप ही रहता है।

13

# आत्मा की शक्तियाँ

**१. दृशि शक्ति का कार्य क्या है ?**

स्व-पर, चेतन-अचेतन आदि भेद किए बिना वस्तु की सामान्य सत्ता मात्र देखना ।

**२. ज्ञान शक्ति का कार्य क्या है ?**

स्व-पर, चेतन-अचेतन आदि सभी वस्तुओं को विशेषों सहित जानना ।

**३. सर्वदर्शित्व शक्ति का कार्य क्या है ?**

आत्मा में तीन लोक, तीन काल की सभी वस्तुओं को एक साथ, एक समय में दर्शन करने की सामर्थ्य होना ।

**४. सर्वज्ञत्वशक्ति का कार्य क्या है ?**

आत्मा में तीन लोक, तीन काल की सभी वस्तुओं को एक साथ, एक समय में जानने की सामर्थ्य होना।

**५. दृशि शक्ति और सर्वदर्शित्व शक्ति में क्या अंतर है ?**

दृशि शक्ति में आत्मा के मात्र दर्शन रूप स्वभाव को बताया है सर्वदर्शित्व शक्ति में 'किसको देखना' - यह बताया है ।

**६. ज्ञान शक्ति और सर्वज्ञत्व शक्ति में क्या अंतर है ?**

ज्ञान शक्ति में मात्र आत्मा के जानने रूप स्वभाव को बताया है और सर्वज्ञत्व शक्ति में 'किसको जानना'- यह बताया है ।

14

# जिनागम से

**१. सप्तभंगी किसे कहते हैं ?**

सात भंगों के समूह को सप्तभंगी कहते हैं। अनेकान्त स्वरूप वस्तु के प्रतिपादन के सात भंग ही होते हैं। जो निम्न हैं - स्यात् अस्ति, स्यात् नास्ति,स्यात् अस्ति- नास्ति, स्यात् अवक्तव्य, स्यात् अस्ति अवक्तव्य, स्यात् नास्ति अवक्तव्य, स्यात् अस्ति- नास्ति अवक्तव्य।

**२. सप्तभंगी कितने प्रकार की होती है? नाम बताओ।**

सप्तभंगी दो प्रकार की होती है -
प्रमाण सप्तभंगी और नय सप्तभंगी ।

**३. 'भी' का प्रयोग कौन सी सप्तभंगी में होता है ?**

प्रमाण सप्तभंगी में।

**४. 'भी' का प्रयोग करते समय क्या लगाना अनिवार्य है ?**

कथंचित् या स्यात्।

**५. 'ही' का प्रयोग कौन सी सप्तभंगी में होता है ?**

नय सप्तभंगी में।

**६. सप्तभंगी को जैनदर्शन में क्या कहा है? और क्यों ?**

सप्तभंगी को जैनदर्शन में अमोघमंत्र कहा है क्योंकि इनसे 'एवकार' का जहरीला जहर उतर जाता है ।

**७. 'एवकार' से क्या तात्पर्य है ?**

'ऐसा ही है' को एवकार कहते हैं।

**८. 'एवकार' जहर कब होता है ?**

जब अपेक्षा नहीं लगाई जाती।

# 15 अभक्ष्य

यथार्थ : तुम तो खेलो-खाओ मस्त रहो ,
भक्ष्य-अभक्ष्य के चक्कर में मत पड़ो,
बच्चों को सब चलता है ,
बच्चों को पाप नहीं पड़ता है ।

विवेकः पाप तो पाप ही रहेगा ,
बाल-युवा से क्या फर्क पड़ेगा ।

यथार्थ : अदालतों का निर्णय तुमने नहीं सुना ,
बालकों को मिलती है जहाँ कम सजा ।

विवेक : जब बालकों को भी मिलती है सजा ,
तो बालकों का अपराध कहाँ कम हुआ ?
अपराधी बालक नहीं रहते हैं घर में ,
जाना पड़ता है उनको भी जेल में ।

यथार्थ : अभक्ष्य न खाने से कौन से महान बन जाओगे?
मजेदार स्वाद से तुम्हीं वंचित रह जाओगे ?

विवेक : द्रव्यहिंसा होती अभक्ष्य भक्षण में ,
भाव हिंसा होती अभक्ष्य भक्षण में ।
राग तीव्र होता अभक्ष्य भक्षण में,
अतः अभक्ष्य त्याग करना जीवन में ।

# 16 सम्यग्दृष्टि - मिथ्यादृष्टि

आत्मा में ही अपनापन करते हैं जो,
आत्मा को अनुभूतिपूर्वक जानते हैं वो।
'यह ही मैं हूँ' ऐसी प्रतीति करते जो,
सम्यक्त्वधारी क्या कहलाते हैं वो?

सम्यग्दृष्टि

देह से मिले आत्मा को तो जानते हैं हम,
देह से भिन्न आत्मा को नहीं जानते हैं हम।
आत्मा को मात्र शब्दों में तो जानते हैं हम,
'यह मैं हूँ' - ऐसा नहीं मानते हैं हम।
यदि 'यह मैं हूँ' - ऐसा भी मानते हैं हम,
तो रागादिक को अपना मान लेते हैं हम।
देह - रागमय जब तक स्व को जानेंगे हम,
तो बतलाओ तब तक क्या कहलाएँगे हम?

मिथ्यादृष्टि

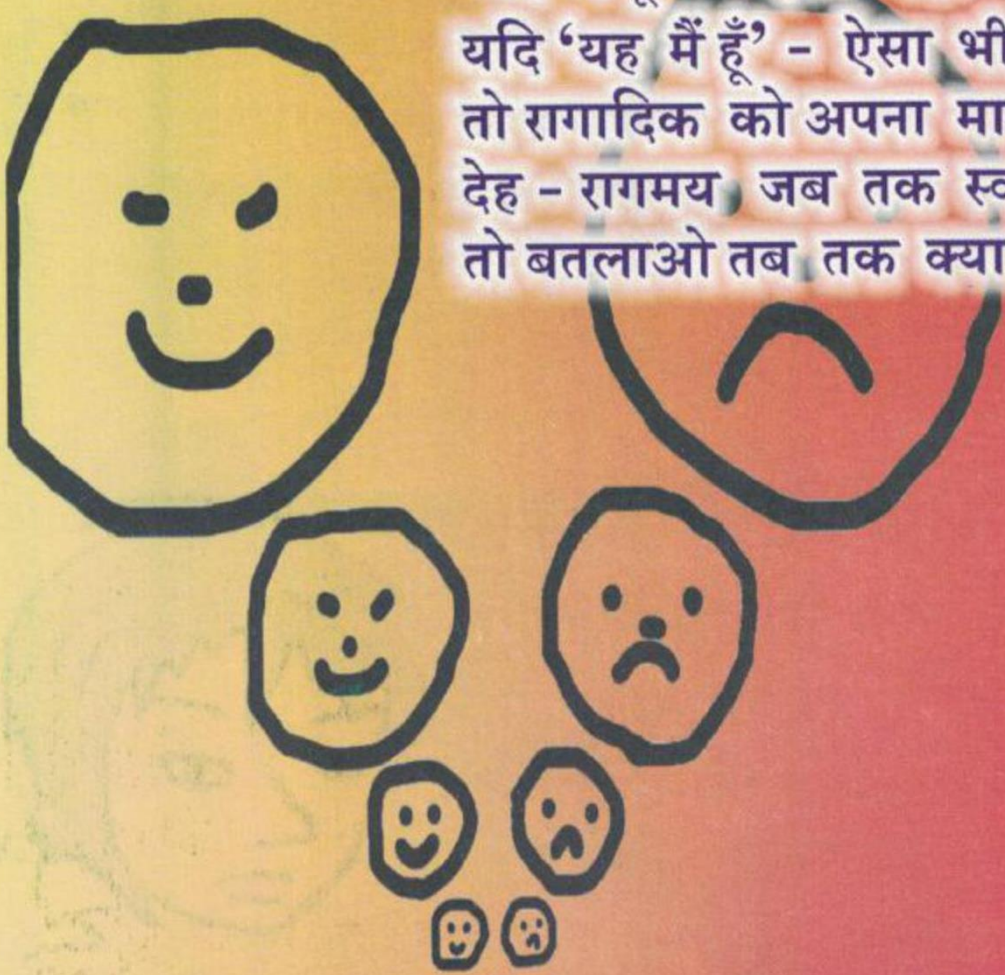

बाल साहित्य के उत्कृष्ट लेखन हेतु प. टोडरमल पुरस्कार से सम्मानित विद्वत्रत्न डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया को सम्प्रति ८ मार्च २००८ को महिला दिवस के अवसर पर मुम्बई की महापौर के शुभ कर कमलों से सम्मानित किया गया। प्रसिद्ध विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल की आप सुयोग्य ज्येष्ठ पुत्री हैं। आपका जन्म अशोकनगर (म.प्र.) में ३० जनवरी १९५८ को हुआ।

आपने बी. ए. (ऑनर्स) संस्कृत में स्वर्णपदक प्राप्त किया।

आपके द्वारा एम. ए. में लघुशोधनिबंध के रूप में लिखी गई आ. अमृतचंद्र और उनका पुरुषार्थसिध्युपाय नामक पुस्तक मात्र १९ वर्ष की अवस्था (२७ नवम्बर १९७७) में प्रकाशित हो गई।

आपने 'आ. कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार: एक समालोचनात्मक अध्ययन' विषय पर शोधकर राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर से पी. एच. डी की उपाधि प्राप्त की है। आपने अपने शोध ग्रन्थ में शोध समीकरणों को ध्यान में रखते हुए आ. कुन्दकुन्द के ग्रंथों और टीकाकारों का सर्वांगीण शोधपरक विवेचन सरल-सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया है जो कि विद्वत्-जन और बुद्धिजीवी वर्ग के साथ-साथ जनसामान्य को भी अपनी ओर आकृष्ट करता है।

आधुनिक बाल जैन साहित्य की प्रणेता आपने जैन सिद्धान्तों को सर्वप्रथम पहेलियों के रूप में प्रस्तुत कर जैन बाल साहित्य को नई दिशा प्रदान की है।

आपके द्वारा लिखी गई बाल पुस्तकों में पहेलियों, कविताओं और प्रश्नोत्तर शैली में लिखे गए पाठों के माध्यम से तत्त्वज्ञान एवं भेदविज्ञान कराया गया है। अद्यावधि जैन समाज में प्रचलित अन्य पाठ्यपुस्तकों से भिन्न शैली, रंगीन, चित्रमय प्रस्तुति एवं मूल तत्त्वज्ञान का समावेश - इन पुस्तकों की विशिष्ट पहचान है।

आपने विभिन्न आयुवर्ग को ध्यान में रखकर भिन्न-भिन्न शैलियों में अध्यात्म को जन - जन तक पहुंचाने का प्रयास किया है। गद्य-शैली, पद्य-शैली, चम्पू (गद्य-पद्य मिश्रित) शैली, पत्रशैली, डायरीशैली, छोटे-छोटे मंचन योग्य नाटक, बड़े-बड़े नाटक आदि साहित्य की विभिन्न विधायों के दर्शन आपकी कृतियों में होते हैं।

आपकी सभी कृतियाँ अध्यात्मरस से सराबोर और भेद-विज्ञान से ओतप्रोत हैं। सरलता आपकी कृतियों की सबसे बड़ी विशेषता है। कलरफुल चित्रों के माध्यम से रोचक प्रस्तुति और आकर्षक आधुनिक भाषा-शैली में सर्वप्रथम लिखी गई आपकी बाल पुस्तकें मील का पत्थर साबित हुई हैं।

सम्प्रति वह अपने परिवार के साथ मुंबई में रहती हैं। जहाँ आपके पति का हीरे-जवाहरात एवं डायमंड ज्वैलरी का व्यवसाय है। मुंबई में आप आध्यात्मिक प्रवचन करती ही हैं, तथा शिक्षण - प्रशिक्षण शिविरों में आपके द्वारा बालकों और युवाओं के लिए विशेष कक्षाओं का आयोजन किया जाता है, जिसमें सभी कम समय में अधिक से अधिक तत्त्वज्ञान प्राप्त करते हैं।

आपके द्वारा अभी तक छोटी - बड़ी ३३ पुस्तकें लिखी गई हैं।